बढ़ती जनसंख्या : समस्या एवं समाधान

प्रस्तावना

भारत की बढ़ती हुई जनसंख्या राष्ट्र की भयावह समस्या है। स्वाधीन भारत में देश की समृद्धि के लिए किए गए सरकार के सभी निर्णय और श्रेष्ठ कार्यों में गतिरोध उत्पन्न होने का एक प्रमुख कारण जनसंख्या में निरंतर वृद्धि है। महान् विचारक गार्नर ने कहा भी है– ''किसी भी राज्य के लिए उसकी साधन-संपन्नता से अधिक जनसंख्या अहितकर है।''

वर्तमान स्थिति

वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार, भारत की जनसंख्या लगभग 121 करोड़ है। भारत इस समय आबादी की दृष्टि से दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा देश है। वस्तुत: किसी देश की जनसंख्या ही उसकी शक्ति का आधार होती है, परंतु अनियंत्रित गति से इसका बढ़ते जाना निश्चय ही देश के लिए बोझ बन जाता है।

स्वाधीनता के उपरांत भारत ने सभी क्षेत्रों में प्रगति की है, किंतु वास्तविक तथ्य यह है कि जब तक आर्थिक विकास होता है, तब तक जनसंख्या इतनी बढ़ चुकी होती है कि वह समग्र विकास को निगल जाती है। परिणामत: प्रगति की सभी योजनाएँ धरी-की-धरी रह जाती हैं।

दुष्परिणाम

जनसंख्या के बढ़ने से परिवार का जीवन स्तर गिरता है। जीवन का विकास रुक जाता है और नैतिक एवं चारित्रिक पतन बढ़ता जाता है। जनसंख्या के बढ़ते जाने से माँग अधिक होती जाती है और उस सापेक्ष में उत्पादन व पूर्ति नहीं बढ़ पाती, जिसके कारण महँगाई बढ़ती जाती है तथा देश की अर्थव्यवस्था बिगड़ जाती है। इस प्रकार जनसंख्या वृद्धि गरीबी, बेकारी, अशिक्षा, बीमारी जैसी कई समस्याओं को जन्म देती है।

उपसंहार

भारत में विभिन्न धर्मों को मानने वाले लोग रहते हैं। विभिन्न धर्मों के रूढ़िवादी लोग अपने-अपने धार्मिक दृष्टिकोण से परिवार नियोजन का विरोध करते हैं। ऐसी देश-विरोधी भावनाओं को राष्ट्र के उत्थान के लिए नष्ट करना नितांत आवश्यक है।

केंद्र व राज्य सरकार के साथ प्रत्येक नागरिक को इसके लिए सजग होना होगा, तभी जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित कर देश को समृद्ध किया जा सकेगा।

class 9th
sub hindi
date 14/4/20
learn and write
in fair notebook